रामकृष्ण मिशन के 'जागृति' कार्यक्रम

प्रलिम्सि के लयि:

रामकृष्ण मशिन का 'जागृति' कार्यक्रम, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई), स्वामी विविकानंद।

मेन्स के लयि:

स्वामी विविकानंद की शिक्षाओं का महत्त्व।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने स्कूली छात्रों के लयि **रामकृष्ण मशिन के 'जागृति' कार्यक्रम** की शुरुआत की।

'जागृति' कार्यक्रम:

- **परचिय:**
  - यह **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (National Education Policy-NEP), 2020** के अनुरूप एक बच्चे के समग्र व्यक्तित्व विकास को सुनिश्चित करने की दिशा में एक पहल है।
  - यह **पहली से पाँचवीं** कक्षा तक के छात्रों के लयि है।
- **पृष्ठभूमि:**
  - रामकृष्ण मशिन, दिल्ली शाखा, वर्ष 2014 से माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को **"आत्मश्रद्धा" (आत्म-सम्मान)** निर्माण और विकल्पों के चयन में सक्षम बनाने के लयि **जागृत नागरिक कार्यक्रम** का सफलतापूर्वक संचालन कर रहा है। यह उन्हें जीवन की **सभी समस्याओं का समाधान खोजने में मदद** करता है।
  - शिक्षाविदों की ओर से **प्राथमिक विद्यालय के छात्रों के लयि इसी तरह के कार्यक्रम** की मांग की गई है।
    - इसके जवाब में **'जागृति' को 126 स्कूलों के लयि डिज़ाइन और संचालति** कयिा गया है।
- **केंद्र बिंदु:**
  - **सामाजिक परिवर्तन** शिक्षा के प्रमुख लक्ष्यों में से एक है।
  - **मूल्य और ज्ञान** भौतिक सुखों से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।
  - भविष्य के लयि तैयार और सामाजिक रूप से जागरूक पीढ़ी के निर्माण के लयि **मूल्य आधारति शिक्षा** आवश्यक है।

रामकृष्ण मशिन:

- **परचिय:**
  - रामकृष्ण मशिन व्यापक शैक्षिक और परोपकारी कार्य करता है तथा भारतीय दर्शन के एक स्कूल अद्वैत वेदांत के आधुनिक संस्करण की व्याख्या करता है।
  - मशिन की स्थापना वर्ष 1897 में विविकानंद द्वारा कोलकाता के पास संत रामकृष्ण (वर्ष 1836-86) के जीवन में सन्निहित वेदांत की शिक्षाओं का प्रसार करना और भारतीय लोगों की सामाजिक स्थितियों में सुधार करने के दोहरे उद्देश्य के साथ की गई थी।
  - संगठनों को 19वीं सदी के बंगाल के महान संत श्री रामकृष्ण (1836-1886) जिन्हें आधुनिक युग का पैगंबर माना जाता है तथा उनके प्रमुख शिष्य स्वामी विविकानंद (1863-1902) द्वारा अस्तित्व में लाया गया था।
- **आदर्श वाक्य: "आत्मानो मोक्षार्थं जगद हिताय चा" ("अपने स्वयं के उद्धार और दुनिया के कल्याण के लयि")।**

स्वामी विविकानंद:

- **जन्म:**

- स्वामी विवेकानंद का जन्म **12 जनवरी, 1863 को हुआ** तथा उनके बचपन का नाम नरेंद्र नाथ दत्त था।
- प्रत्येक वर्ष स्वामी विवेकानंद की जयंती (12 जनवरी) को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाई जाती है।
- वर्ष 1893 में खेतड़ी राज्य के महाराजा अजीत सिंह के अनुरोध पर उन्होंने **'विवेकानंद'** नाम अपनाया।

- **योगदान:**
  - उन्होंने विश्व को वेदांत और योग के भारतीय दर्शन से परिचित कराया।
    - उन्होंने **'नव-वेदांत'** का प्रचार किया, एक पश्चिमी धारा के माध्यम से हिंदू धर्म की व्याख्या और भौतिक प्रगति के साथ आध्यात्मिकता के संयोजन में विश्वास किया।
  - विवेकानंद ने मातृभूमि के उत्थान के लिये शिक्षा पर सबसे अधिक बल दिया। मानव हेतु चरित्र-निर्माण की शिक्षा की वकालत की।
  - उन्हें वर्ष 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद में दिये गए उनके भाषण के लिये जाना जाता है।
  - सांसारिक सुख और मोह से मोक्ष प्राप्त करने के चार मार्गों का वर्णन उन्होंने अपनी पुस्तकों (राजयोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग) में किया है।
  - नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने विवेकानंद को **"आधुनिक भारत का निर्माता"** कहा था।
- **संबंधित संगठन:**
  - वह **19वीं सदी के रहस्यवादी रामकृष्ण परमहंस** के मुख्य शिष्य थे और उन्होंने वर्ष 1897 में **रामकृष्ण मिशन** की स्थापना की।
    - रामकृष्ण मिशन एक ऐसा संगठन है जो मूल्य आधारित शिक्षा, संस्कृति, स्वास्थ्य, महिला सशक्तीकरण, युवा एवं आदिवासी कल्याण एवं राहत तथा पुनर्वास के क्षेत्र में काम करता है।
  - वर्ष 1899 में उन्होंने **बेलूर मठ की स्थापना** की, जो उनका स्थायी निवास बन गया।
- **राष्ट्रवाद:**
  - हालाँकि राष्ट्रवाद के विकास का श्रेय पश्चिमी प्रभाव को जाता है लेकिन स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद भारतीय आध्यात्मिकता और नैतिकता में गहराई से निहित है।
  - उनका राष्ट्रवाद मानवतावाद और सार्वभौमिकता पर आधारित है, जो भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं।
  - पश्चिमी राष्ट्रवाद के विपरीत जो प्रकृति में धर्मनिरपेक्ष है, स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद धर्म पर आधारित है जो भारतीय लोगों का जीवन रक्त है।
  - **उनके राष्ट्रवाद के आधार हैं:**
    - जनता, स्वतंत्रता और समानता के लिये गहरी चिंता व्यक्त की और सार्वभौमिक भाईचारे के आधार पर दुनिया के आध्यात्मिक एकीकरण पर बल दिया।
    - "कर्मयोग" निःस्वार्थ सेवा के माध्यम से राजनीतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये नैतिकता की एक प्रणाली है।
  - उनके लेखन और भाषणों ने मातृभूमि को देशवासियों द्वारा मन और दिल से पूजे जाने वाले एकमात्र देवता के रूप में स्थापित किया।
- **मृत्यु:**
  - वर्ष 1902 में बेलूर मठ में उनकी मृत्यु हो गई। पश्चिम बंगाल में स्थित बेलूर मठ, रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन का मुख्यालय है।

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ramakrishna-mission-s-awakening-programme